International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2,February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

समकालीनों के बीच कवि गोरख पाण्डेय

Rakesh Kumar Kashyap
M.A.,UGC-NET (Hindi)
Dept. of Hindi
Magadh university, Bodhgaya

गोरख पाण्डेय जनवादी कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए। उनका रचनाकाल सन् 1969 से सन् 1988 के बीच अविस्थत है। इस दौर में नक्सलबाड़ी का आंदोलन उत्कर्ष पर था। गोरख जनआंदोलन की उपज हैं। इन दो दशकों में न केवल गोरख बल्कि आलोकधन्वा, कुमार विकल, राजेश जोशी, अरुण कमल आदि कवियों ने कई प्रयोगभूमियों से गुजरते हुए जनवादी कविताओं को ऊँचाई प्रदान की है। धूमिल तो इसी वक्त अपनी रचनाओं में एक क्रांतिकारी परिवर्तन का संकेत देते हैं। राजकमल चौधरी ने तो एक बहस में भाग लेते हुए कहा कि :– संविद सरकारों से मुक्ति नहीं मिलने वाली है और हमें जनता की ओर फिर लौटना होगा।[1]

गोरख इन तमाम महत्त्वपूर्ण घटनाओं से प्रभावित होकर 'नक्सलबाड़ी का किसान विद्रोह और साहित्य' में लिखते हैं:– इस घटना में कम्युनिष्ट आंदोलन में संसदीय मार्ग और जनक्रांति के बीच लम्बे अरसे से चलने वाली बहस की क्रांति के पक्ष में एक निर्णय तक पहुँचाया। साबित किया कि भारतीय जनता के बारे में उसके निष्क्रिय, अहिंसक और भाग्यवादी होने का तर्क एक सफेद झूठ है। वह शोषण और जुल्म के खिलाफ हथियार उठा सकती है। इसने ढेर सारे संवेदन ील युवाओं तथा रचनाओं को यह वि वास दिलाया कि मौजूदा शोषण के ढ़ाँचे को तोड़ा जा सकता है।

व्यक्ति की मुक्ति समाज से परे होने या उसका विरोधी होने में नहीं, बल्कि समाज को क्रांतिकारी ढंग से बदलने में है। कहीं न कहीं इसी घटना के जीवनदायी और ताजगी भरे प्रभाव में धूमिल की सबसे समर्थ कविता 'पटकथा' कुछ यों ही शुरु होती है :–

जब मैं बाहर आया

मेरे हाथों में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2,February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

एक कविता थी

और दिमाग में

आंतों का एक्स–रे

.....

बाहर हवा थी

धूप थी

घास थी

मैंने कहा आजादी

मुझे अच्छी तरह याद है

मैंने यही कहा था

मेरे नस–नस में बिजली

दौड़ रही थी

उत्साह में खुद मेरा स्वर

मुझे अजनवी लग रहा था

मैंने कहा–आजादी

और दौड़ता हुआ खेतों की ओर

गया।

वहाँ कतार–के–कतार अनाज के अंकुए फूट रहे थे।

इस कविता में नक्सलबाड़ी की धमक साफ सुनाई पड़ती है, जहाँ वे कहते हैं–

भूख से रियाती हथेली का नाम 'गया' है

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2,February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

और भूख में तनी हुई मुट्ठी का नाम नक्सलबाड़ी है।

उस दौर के एक प्रमुख कवि धूमिल की कविता में इतनी ऊर्जा के साथ नई दिशा के स्वतःस्फूर्त बोध का संकेत आकस्मिक नहीं है।[2]

गोरख पाण्डेय दर्शनशास्त्र के गंभीर अध्येता रहे। मार्क्सवाद को तो जैसे उन्होंने आत्मसात ही कर लिया था। गोरख विचार के धरातल पर सबसे अग्रणी कतार के कवि सिद्ध हुए। गोरख ने अपनी कविता में भी दर्शन जैसे गंभीर विषय को शामिल किया। वे प्रगतिशीलता के पक्षधर रहे। गोरख न केवल कविता करते हैं बल्कि मीटिंग, रैली, सभा, जुलूस में भी शामिल होते हैं। गोरख कविता को व्यक्तिगत कर्म मानते हैं परन्तु मूलतः सामाजिक कर्म ही मानते हैं। गोरख पाण्डेय से राणा प्रताप की बातचीत में जब राणा प्रताप कविता की सामाजिक भूमिका के बारे में पूछते हैं तो गोरख कहते हैं– "कविता की भूमिका के बारे में अनेक मान्यताएँ हैं। कुछ लोग तो, जैसा कि आप जानते ही हैं, यह मानते हैं कि कविता की कोई सामाजिक भूमिका नहीं, बल्कि यह व्यक्ति की चेतना और भावना के लिए होती हैं। हम इस नजरिए का विरोध करते हैं। हमारा मानना है कि कविता व्यक्तियों के द्वारा लिखी जाने के बावजूद मूलतः एक सामाजिक कर्म है। सामाजिक कर्म पहले तो इसलिए कि कविता सामाजिक संगठन का एक प्रमुख माध्यम भाषा में लिखी जाती है। दूसरे यह कि कवि के विचार, कवि–कर्म का कौशल–रूप और अन्तर्वस्तु–यह सब कुछ समाज और परम्परा से जुड़ा होता है। इसका मतलब यह नहीं कि रचनाकार का अपना व्यक्तिगत योगदान उसमें नहीं होता। लेकिन वह खुद भी सामाजिक सम्बन्धों की एक इकाई होता है। हर सामाजिक कर्म समाज के लिए उपयोगी या अनुपयोगी हो सकता है। समाज के लिए उपयोगी वह तमाम कला या कविता होती है, जो उसके विशिष्ट ऐतिहासिक दौर को व्यक्त करती है, उस दौर की समस्याओं से टकराती है और उन समस्याओं की दिशा की ओर संकेत करती है। जाहिर है कि हम ऐसी कविता चाहते हैं, जो यह सब काम करती हो। लेकिन कविता अनुपयोगी भी हो सकती है, जैसे कि वह अपने को समाज से ऊपर या परे दिखा सकती है। समाज के सिर्फ एक हिस्से से, वह भी उसके विकास की गति रोकने वाले हिस्से से, जुड़ी हो सकती है और मनुष्य की चेतना को

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2,February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सँवारने और गति ील बनाने की अपेक्षा कुन्द करने में सहायक हो सकती है। हम ऐसी अनुपयोगी कविता का विरोध करते हैं।[3]

गोरख के समकालीन रहे आलोकधन्वा भी जनवादी कविता के प्रति जवाबदेह रहे। सन् 1972 में प्रकाशित 'जनता का आदमी' कविता से आलोक एक खबर की तरह चर्चा में आए। इसी क्रम में 'गोली दागो पोस्टर' कविता चर्चित हुई, जिसकी पंक्तियाँ द्रष्टव्य है।

यह उन्नीस सौ बहत्तर की बीस अप्रैल है या

किसी पेशेवर हत्यारे का दायाँ हाथ या किसी जासूस

का चमड़े का दस्ताना या किसी हमलावर की दूरबीन पर

टिका हुआ धब्बा है

जो भी हो– इसे मैं केवल एक दिन नहीं कह सकता!

यह कविता नहीं है

यह गोली दागने की समझ है

जो तमाम कलम चलानेवाले को

तमाम हल चलानेवालों से मिल रही है।[4]

इस दौर के चर्चित कवि कुमार विकल रहे हैं। नक्सलबाड़ी आंदोलन का प्रभाव कुमार विकल पर भी पड़ा। परन्तु उनकी कविता में संशय बना रहता है। राजेश जोशी 'एक कवि की 'नोट बुक' में कुमार विकल के सम्बन्ध में लिखते हैं– "कुमार विकल भी सातवें दशक के उत्तरार्ध में आई कविता में शामिल होते हैं, लेकिन उनमें आस्था और संशय दोनों बराबर बने रहते हैं। वाम आन्दोलनों के मतभेदों पर भी कई भावुक प्रतिक्रियाएँ उनकी कविता में है। 'एक गाँव का नाम' में नक्सलबाड़ी पूरे देश का नाम बन जाता है। निजी और आत्मीय दृश्यों में उनकी भावुकता ज्यादा संयत होती है लेकिन राजनीतिक संदर्भ में उनमें कई बार अतिरंजना होती है। इसलिए वे जब कविता में बहस करते नजर आते हैं तब भी तार्किक के बजाए उनकी टिप्पणियाँ भावुक अधिक होती हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2,February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

छह अक्षरों वाला

छोटा–सा शब्द

सिर्फ एक गाँव का नाम नहीं

पूरे देश का नाम है

यह उत्साहित भावुकता ही दूसरी जगह 'मुक्ति का दस्तावेज' में हतशा में बदल जाती है।

और मुक्ति के लिए छटपटाता मेरा मन

वामपंथी राजनीति के तीन शिविरों में भटकता है

और हर शिविर से

मुक्ति का एक दस्तावेज लेकर लौटता है

इसी कविता में कुमार विकल कहते हैं –

अब तो हर आस्था गहरे संशय को जन्म देती है

और नया विश्वास अनेकों डर जगाता है।[5]

गोरख के सामने कविता का उद्देश्य स्पष्ट था। उनके विचार में भटकाव या संशय लेशमात्र भी नहीं था। यही कारण है कि कविता का दायित्व का पूरा निर्वाह करते हैं। 'कविता' नामक शीर्षक को देखा जा सकता हैः–

कविता, युग की नब्ज धरों!

.....

उलटे अर्थ विधान तोड़ दो

शब्दों से बारुद जोड़ दो

अक्षर–अक्षर पंक्ति–पंक्ति को

छापामार करो![6]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2,February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कवि गोरख काव्य में कला के नाम पर व्यापकता और दुरुहता के पक्षधर नहीं रहे। व्यंग्य के मामले में गोरख ब्रेख्त और नागार्जुन के बाद सबसे ज्यादा मुखर दीखते हैं। 'समझदारों का गीत,' 'समाजवाद बबुआ धीरे–धीरे आई', 'अपनी चिट्ठी', 'अमीरों का कोरस' आदि प्रचलित है। गोरख कला की जरूरत महसूस करते हुए लिखते हैं :–

कला कला के लिए हो
जीवन को खूबसूरत बनाने के लिए
न हो
रोटी रोटी के लिए हो
खाने के लिए न हो
.....
फिलहाल, कला शुद्ध बनी रहे
और शुद्ध कला के
पावन प्रभामंडल में
बने रहें जल्लाद
आदमी को
फांसी पर चढ़ाने के लिए [7]

गोरख के समकालीन रहे लीलाधर जगूड़ी भी संवेदनशील और प्रतिबद्ध कवि रहें हैं मगर अपनी कविताओं में शिल्प के अनुसंधान और आडम्बरपूर्ण काव्यविधान के मोह में पड़ जाते हैं। उनकी 'रोजाना' कविता की पंक्तियाँ इस प्रकार है :–

इससे पहले कि वे सारी–की–सारी जाग जाये
और जंगल किसी पुरानी मशीन की तरह
चिचियाने लगे

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2,February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

.....

रोजाना की एक सबसे पहली चिड़िया

जंगल और बस्ती के बीच का वीराना तोड़ती है

और आखिरी पहर के गाढ़े अंधेरे में

अस्पताल के लम्बे दरख्तों से आसमान में जाकर

फुनगियों तक डुबकी लगाती हैं।[8]

इस कविता की पंक्ति पर परमानन्द श्रीवास्तव की टिप्पणी है :–

"कविता के इस पाठ–क्रम में आगे बढ़ते जाएँ तो दूर तक पता नहीं लगेगा कि कवि का मुख्य अभिप्रेत क्या है? इससे अच्छे तो छायावादी कवि पंत थे कि पहली ही पंक्ति में कह देते थे–

'प्रथम रश्मि का आना रागिनी।

तुने कैसे पहचाना!'[9]

गोरख अपनी कविता को दुरुहता से बचाय रखने का भरसक प्रयास करते हैं। 'स्वर्ग से विदाई' के संयोजकीय में लिखा गया है कि :– ज्ञान का बोझ अक्सर कविता को दुरुहता में कैद कर जाता है जबकि साहित्याचार्य गोरख मार्क्सवाद और अस्तित्वाद की जानकारी के अपने गम्भीर पाण्डित्य को लोकप्रचलित कुछ मिसालों से आगे जाने की इजाजत नहीं देते, क्योंकि जनता का कवि होना उनकी पहली शर्त रही है। स्तरीयता और लोकप्रियता की खाई पाटने में उन्हें उस्तादी हासिल थी।[10]

गोरख के समकालीन रहे राजेश जोशी अत्यंत ही संवेदनशील कवि के रूप में ख्याति प्राप्त की है। उनकी कविता की गहनता और व्यापकता अत्यंत मार्मिक रहती है। राजेश जोशी कल्पना के बल विनाशकारी ताकतों के विरुद्ध कारगर हस्तक्षेप करते हैं। उनकी एक कविता है :–

मैं सारे स्वप्नों को गूंथ–गूंथकर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2,February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

एक खूब लम्बी निसेनी बनाउँगाा

और सारे भले लोगों को ऊपर चढ़ाकर

हटा लूँगाा निसेनी

ऊपर किसी ग्रह पर बैठकर

ठेंगा दिखाउँगा मैं सारे दुष्टों को

कर डालो कर डालो जैसे करना हो नष्ट

इस दुनिया को

मैं वहीं उगाउँगाा हरी सब्जियाँ और

तन्दूर लगाउँगा।[11]

राजेश जोशी की कविता में वास्तविकता से दूर, दूसरे ग्रह पर जाकर 'तन्दूर लगाने' जैसे पलायन के समान है। राजेश जोशी की कविता में भी एक सपना का अवगाहन है। दूसरी ओर गोरख की कविता में लोक है और यथार्थ की प्रतिबद्धता। जब गोरख 'आँखे देखकर' नामक कविता में लिखते हैं :–

ये आँखें है तुम्हारी/तकलीफ का उमड़ता हुआ समन्दर/इस दुनिया को/

जितनी जल्दी हो/बदल देना चाहिए/

वही गोरख के 'सपने भी सूखी और आजाद' होना चाहते हैं।

मैंनेजर पाण्डेय गोरख पाण्डेय की कविता पर टिप्पणी करते हुए लिखते है :–

"गोरख पाण्डेय तमाम आधुनिकतावादी जनवादी कवियों से भिन्न थे। गोरख का जनवाद, बोझिल, भयावह व आतंकित करने वाला नहीं था बल्कि सरल और अपनी बात को स्पष्ट रूप में रखने वाला था। गोरख के सम्पूर्ण रचना संसार में ब्रेश्ट और नागार्जुन का राजनीतिक व्यंग्य परिलक्षित होता है। गोरख की कविता एकलाप नहीं संवाद से समाधान की ओर जाती है।[12]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2,February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गोरख के समकालीनों में जिन कवियों का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है, उनमें ख्यात कवि हैं, महे वर, वेणु गोपाल, शिवमंगल, सिद्धान्तकार, कुमारेन्द्र, पारसनाथ सिंह, विष्णुचंद्र शर्मा, मंगलेश डबराल, वीरेन डंगबाल, नीलाभ आदि। समकालीन कवियों में गोरख ही एकमात्र कवि रहे जिन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखा गया, बहुत कवियों ने तो उनका नाम तक लेना मुनासिब नहीं समझा। गोरख के सिद्धान्त और व्यवहार में कोई अन्तर नहीं था। गोरख जैसा कवि दुर्लभ ही मिलता है। दावे के साथ कहा जा सकता है कि वैचारिक धरातल पर 'लोक–कवि' गोरख ही हुए।

संदर्भ–

1. लोहा गर्म हो गया है, गोरख पाण्डेय, जनसंस्कृति मंच, 1990–पृ0–50
2. वही .....पृ0–51
3. वही .....पृ0–122
4. दुनिया रोज बनती है, आलोकधन्वा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण–2015, पृ0 सं0–27,29
5. एक कवि की नोटबुक, राजेश जोशी, पहला संस्करण 2004, राजकमल प्रकाशन–नई दिल्ली, पटना। पृ0 सं0–190,191
6. गोरख पाण्डेय, समग्र कविताएँ, जनसंस्कृति मंच, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण, 2014 पृ0–48
7. वही .....पृ0– 42
8. शब्द और मनुष्य, परमानन्द श्रीवास्तव प्रथम संस्करण 2014, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, पृव–165
9. वही .....पृ0–165
10. स्वर्ग से विदाई–गोरख पाण्डेय, जनसंस्कृति मंच प्रथम संस्करण–1989 संयोजकीय (भूमिका) पृ0–03
11. शब्द और मनुष्य, परमानन्द श्रीवास्तव प्रथम संस्करण 2014, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली–पृ0–185
12- लोहा गरम हो गया है, गोरख पाण्डेय जनसंस्कृति मंच–1990, तीसरा फ्लैप